Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2023 4(1), 4704–4709

A STUDY OF THE IMPACT OF TEACHING EFFICIENCY OF TEACHERS WORKING IN GOVERNMENT AND PRIVATE EDUCATIONAL INSTITUTIONS ON THE LEARNING ABILITY OF STUDENTS IN THE CONTEXT OF RAIPUR DISTRICT

शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का एक अध्ययन रायपुर जिला के संदर्भ में

Akhilesh Kumar Sharma [1], Pragya Jha [2]

[1] Research Scholar, Mats School of Education, Mats University, Gullu Arang, (CG), India
[2] Research Director, Education Department, Mats School of Education Arang, Mats University, Gullu Arang, (CG), India

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.6243

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: To study the teaching efficiency of teachers working in government and private educational institutions, students of class 9th have been selected as population in Raipur district and 200 teachers from 10 government and 10 private educational institutions have been randomly selected as sample. Flanders' observation of class interaction analysis system has been used to measure teaching efficiency. Survey method was used for research analysis and T-value was used for verification of hypotheses. The study found that there is no significant difference in the teaching efficiency of teachers working in government and private educational institutions.
200 students from government educational institutions of Raipur and 200 students studying in private educational institutions have been selected, which includes both urban and rural students, including both boys and girls.

Hindi: शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण-दक्षता का अध्ययन हेतु रायपुर जिले में जनसंख्या के रूप में कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों का तथा न्यादर्श के रूप में 10 शासकीय एवं 10 निजी शिक्षण संस्थानों के 200 शिक्षकों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। शिक्षण-दक्षता का मापनी के लिए फ्लैण्डर्स की कक्षा अंतःक्रिया विश्लेषण प्रणाली का अवलोकन का प्रयोग किया गया है। शोध विवेचना हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए टी-मूल्य का प्रयोग किया गया। अध्ययन में पाया कि शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण-दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है। रायपुर जिले के शासकीय शिक्षण संस्थान से 200 एवं निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों को चुना गया है जिसमें शहरी एवं ग्रामीण दोनों विद्यार्थी शामिल है जिसमें छात्र व छात्रा दोनों ही शामिल है।

Keywords: Government, Private, Teaching Efficiency, Learning Ability, Education, Teacher, School, Students, Behavior, Training, शासकीय, निजी, शिक्षण दक्षता, अधिगम क्षमता, शिक्षा, शिक्षक, विद्यालय, विद्यार्थियों, व्यवहार, प्रशिक्षण

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जगत की धरोहर है। प्रत्येक राष्ट्र के विकास में वहाँ की शिक्षा प्रणाली का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। आधुनिक काल में शिक्षा-शिक्षण एवं अधिगम की प्राचीन अवधारणाएँ बदल चुकी है। शिक्षा के प्रसार में वृध्दि के साथ-साथ शिक्षा के स्तर में उन्नयन करके राष्ट्रीय विकास की दर को बढ़ाया जा सकता है। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है जिसके प्रमुख घटक-शिक्षक, छात्र एवं पाठ्यक्रम तीनों ही होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि किसी समाज में शिक्षक का दर्जा उसके सामाजिक, सांस्कृतिक व लोकाचार को प्रतिबिम्बित करता है शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। शिक्षकों को छात्र के भविष्य का निर्माणकर्ता माना जाता है। एक अच्छे शिक्षक की शिक्षण दक्षता छात्र की अधिगम क्षमता को बहुत

प्रभावित करती है। कक्षा शिक्षण कार्य में चाहे वह शासकीय स्कूल का हो या निजी स्कूलों का दोनों ही में शिक्षक की शिक्षण दक्षता छात्रों की अधिगम को प्रभावित करती है। शिक्षक की अच्छी शिक्षण दक्षता ज्ञान, कौशल मूल्य व अभिवृत्ति संबंधी योग्यता कक्षा शिक्षण कार्य में छात्रों की विषय के प्रति अधिगम क्षमता को बढ़ाने में अति महत्वपूर्ण होती है। शिक्षकों की अच्छी शिक्षण दक्षता से छात्रों को अधिगम करने में आसानी होती है। छात्रों की अधिगम क्षमता में वृध्दि करने में शिक्षक की शिक्षण दक्षता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

2. समस्या कथन

शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का एक अध्ययन रायपुर जिला के संदर्भ में।

अध्ययन की उद्देश्य

1) शासकीय एवं निजी, शहरी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन।
2) शासकीय एवं निजी ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन।

3. अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- **H01** शासकीय एवं निजी, शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- **H02** शासकीय एवं निजी, शहरी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- **H03** शासकीय एवं निजी, ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षको की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है

4. शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण-दक्षता का मापनी के लिए फ्लैण्डर्स की कक्षा अंतः क्रिया विश्लेषण प्रणाली का अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया। और अधिगम क्षमता को मापने के लिए वार्षिक सैध्दांतिक परीक्षा मापनी का प्रयोग किया गया है।

1) अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायपुर जिला के अंतर्गत शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों को जनसंख्या हेतु चयनित किया गया।

2) अध्ययन की न्यादर्श

विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता का अध्ययन करने के लिए रायपुर जिला के विभिन्न शासकीय एवं निजी शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के कक्षा 9 वीं के 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

5. वर्णनात्मक सांख्यिकीय

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयुक्त चरों जैसे शिक्षकों की शिक्षण दक्षता एवं विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता विभिन्न पक्षों की सारणी बनाई गई है। तथा इन चरों को वर्गीकृत कर सारणीबद्ध रूप प्रदान किया गया है।

सारणी संख्या 1 शासकीय एवं निजी, शहरी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्र.	चर	N	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
1	शासकीय शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता	150	50-44	6-95	2-90	
2	निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता	150	53-08	8-68		0.01 S

df 298 के लिए 0.01 का मान =2.59

df 298 के लिए 0.05 का मान =1.97

विश्लेषण

प्रस्तुत सारणी संख्या 1 के अनुसार शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता के मध्यमान 50.44 व 53.08 प्राप्त हुए हैं। मानक विचलन की गणना करने पर सरकारी व निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों का मान क्रमशः 6.95 व 8.68 प्राप्त हुए हैं। इनसे प्राप्त टी का मान 2.90 है जो की 298 के लिए सार्थकता स्तर 0.01 सारणीयन मूल्य 2.59 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। को अस्वीकृत किया जाता है।

चूंकि निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों का मध्यमान व शासकीय शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों से अधिक है इसीलिए कक्षागत परिस्थितियों में शासकीय शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों से कम है। अर्थात इससे स्पष्ट होता है कि शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में सार्थक अंतर होता है।

आरेख संख्या 1 शासकीय एवं निजी, शहरी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

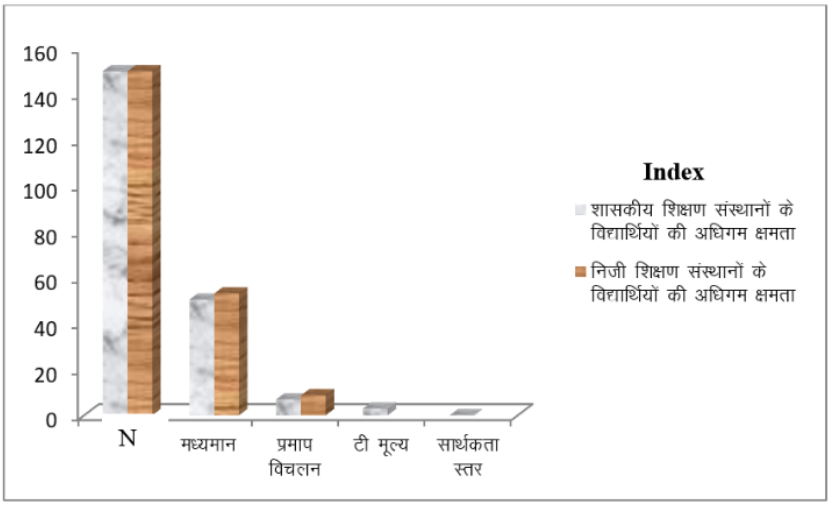

सारणी संख्या 2 शासकीय एवं निजी शहरी एवं ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षको की शिक्षण-दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्र.सं.	चर	N	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
1	शासकीय शहरी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता	150	53.15	7.42	3-05	
2	शासकीय ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता	150	50.38	8.27		0.01 S

df 298 के लिए 0.01 का मान =2.59

df 298 के लिए 0.05 का मान =1.97

विश्लेषण

प्रस्तुत सारणी क्रमांक 2 के अनुसार शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता के मध्यमान 53.15 व 50.38 प्राप्त हुए हैं। मानक विचलन की गणना करने शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों का मान क्रमशः 7.42 व 8.27 प्राप्त हुए हैं। इनसे प्राप्त टी का मन 3.05 जो की 298 के लिए सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मूल्य 2.59 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है को अस्वीकृत किया जाता है।

चूंकि शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों से अधिक है इसलिए कक्षागत परिस्थितियों में शहरी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता निजी शिक्षण संस्थानों विद्यार्थियों से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में सार्थक अंतर होता है।

आरेख संख्या 2 शासकीय एवं निजी शहरी एवं ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षको की शिक्षण -दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

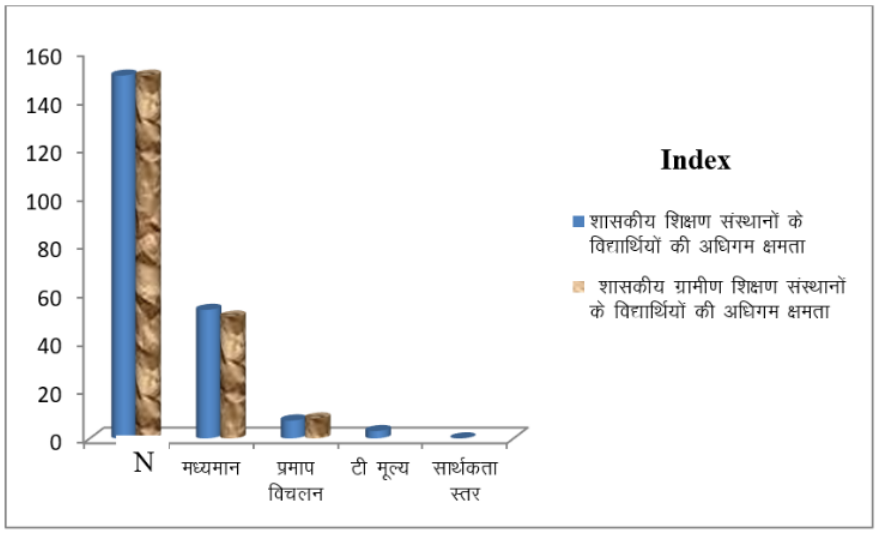

सारणी संख्या 3 शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह शासकीय	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	समूह	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
शासकीय शिक्षण संस्था के शिक्षक	51.84	6.57	2.90 S	शासकीय शिक्षण संस्था के विद्यार्थी	50.44	6.95	2.90 S
निजी शिक्षण संस्था के शिक्षक	47.09	6.99		निजी शिक्षण संस्था के विद्यार्थी	53.08	8.68	

df=98 के लिए 0.01 का मान =2.62, df=298के लिए 0.01 का मान =2.59

df=98 के लिए 0.05 का मान =1.9, df=298 के लिए 0.05 का मान =1.97

6. शिक्षण दक्षता का विश्लेषण

प्रस्तुत सारणी संख्या 3 के अनुसार शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान 51.84 व 47.9 प्राप्त हुए हैं। स्वतंत्रता स्तर 98 के लिए टी का मान 2.90 प्राप्त होता है जो की सार्थकता स्तर 0.01 के मान से अधिक है।

अतः शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर है।

7. अधिगम क्षमता का विश्लेषण

शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता के मध्यमान 50.44 व 53.08 प्राप्त हुए हैं। स्वतंत्रता स्तर 298 के लिए टी का मान 2.90 प्राप्त होता है जो की सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी में दिये गये मान 2.59 से अधिक है। अतः शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों कि अधिगम क्षमता में सार्थक अंतर है।

निष्कर्षतः शासकीय शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों से अधिक होते हुए भी वहां के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता अधिक नहीं है। जबकि निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता कम होते हुए भी वहां के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता अधिक है। शासकीय शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों कि शिक्षण दक्षता का वहां के विद्यार्थियों का अधिगम क्षमता से कोई संबंध नहीं है। इसलिए शासकीय शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

आरेख संख्या 3 शासकीय व निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

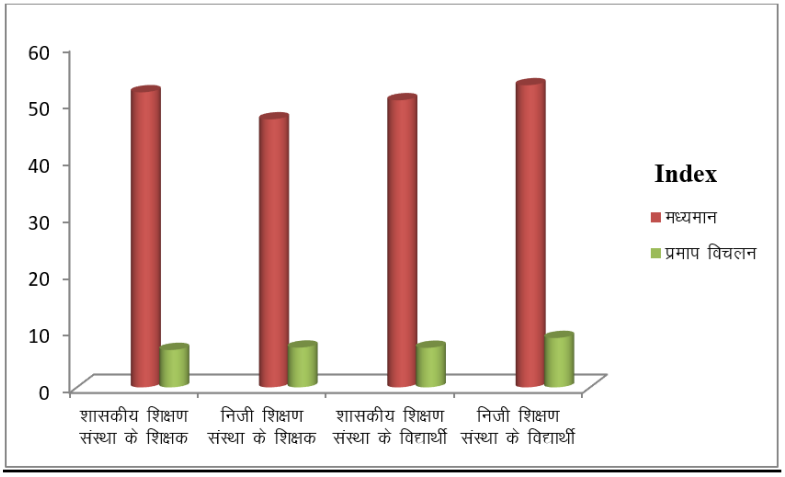

सारणी संख्या 4 शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समूह	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	समूह	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
शहरी शिक्षण संस्था के शिक्षक	49.16	6.68	1.02	शहरी शिक्षण संस्था के विद्यार्थी	53.15	7.42	3.05
ग्रामीण शिक्षण संस्था के शिक्षक	50.06	7.36	N S	ग्रामीण शिक्षण संस्था के विद्यार्थी	50.38	8.27	S

df=98 के लिए 0.01 का मान =2.62, df=298 के लिए 0.01 का मान =2.59

df=98 के लिए 0.05 का मान =1.9, df=298 के लिए 0.05 का मान =1.97

8. शिक्षण दक्षता का विश्लेषण

प्रस्तुत सारणी संख्या 4 के अनुसार शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों कि शिक्षण दक्षता के मध्यमान 49.16 व 50.6 प्राप्त हुए हैं। स्वतंत्रता स्तर 98 के लिए टी का मान 1.02 प्राप्त होता है जो की सार्थकता स्तर 0.05 के मान से कम है।

अतः शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों कि शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।

9. अधिगम क्षमता का विश्लेषण

शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों कि अधिगम क्षमता के मध्यमान 53.15 व 50.38 प्राप्त हुए हैं। स्वतंत्रता स्तर 298 के लिए टी का मान 3.05 प्राप्त हुआ है जो की सार्थकता 0.01 के सारणी में दिये गये मान 2.59 से अधिक है।

अतः शहरी व ग्रामीण शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों कि अधिगम क्षमता में सार्थक अंतर है।

निष्कर्षतः- ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों कि शिक्षण दक्षता का मध्यमान अधिक होने के साथ ही वहाँ के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता कम है। जबकि शहरी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता कम होने के साथ वहाँ के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता अधिक पाई गई है। ग्रामीण शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों कि शिक्षण दक्षता का ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में सार्थक संबंध नहीं है। इसीलिए ग्रामीण अधिगम क्षमता के शिक्षकों की शिक्षक शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

आरेख संख्या 4 शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

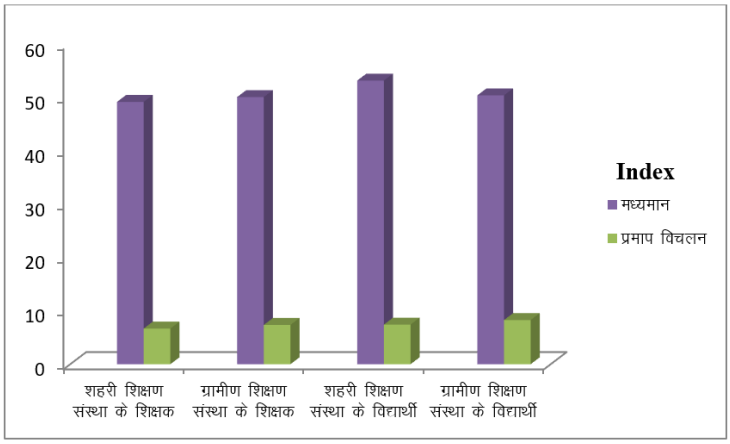

10. निष्कर्ष

शासकीय शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान निजी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता से अधिक हैं। कक्षागत् परिस्थितियो में शासकीय शिक्षक योग्य व दक्ष पाए गए। क्योंकि शासकीय शिक्षक शिक्षण कार्य में अधिक योग्य हैं। शिक्षक कक्षा को रूचिकर बनाने, छात्रों को सिखने के लिए प्रोत्साहित करने, छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करने व कक्षा में अनुशासनात्मक वातावरण के निर्माण करने के प्रति अधिक सजग व समर्पित है। इसलिए कक्षागत् परिस्थितियों में शासकीय शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों व विद्यार्थियों के मध्य अधिक सामंजस्य पाया गया। अंतः शासकीय शिक्षक निजी शिक्षकों की अपेक्षा अधिक प्रभावी रूप से शिक्षण कार्य करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

कौल, लोकेश (2010) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली
कपिल एच.के. (1982) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
प्रसाद लोकेश के (2010) : अनुसंधान पद्धतिशास्त्र नई दिल्ली कोवरी युक्स
भटनागर, ए.बी. मीनाक्षी, अनुराग, (2003) : एजुकेशनल साइकोलोजी, आर. लाल बुक डिपो जनवरी
यादव, जितेन्द्र (2010) : ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी व ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकीय गुणवत्ता के कारण पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन'', डण्म्क्ण् प्रगति महाविद्यालय, रायपुर पृ. क्र. 8-10.
यादव, सतीश कुमार (2009) : अध्यापक शिक्षा की समस्याएँ एवं चुनौतियों भारतीय आधुनिक शिक्षा
शर्मा आर.ए. (2011) : शिक्षा में अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया आर लाल बुक डिपो
ढौंढियाल. एस. एन. फाटक ए.बी. (2000) : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र जयपुर राज. हिंदी ग्रंथ अकादमी भटनागर
मिश्रा, डॉ आरती, एवं वर्मा, श्रीमती संगीताः ''उच्चतर माध्यमिक विद्यायल के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन'' International Journal of Creative Reserarch Thoughts, Vol-11, Issue-5, May 2023. Page. 1